IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अल्मोड़ा परिसर के युवाओं पर मीडिया के प्रभावों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 ललित चंद्र जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर (गेस्ट)
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)–263601

शोध सार–

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ के युवा पर निर्भर करती है। देश के युवाओं को साथ लेकर चलने से किसी भी देश, समाज एवं राष्ट्र की तस्वीर बदल सकती है। क्योंकि देश के भविष्य को संवारने के लिए सर्वाधिक जोश व उत्साह युवाओं में ही होता है। युवा आज के वक्त की मांग हैं। आज कई देश एवं समाज के समक्ष कई समस्याएं व्याप्त हैं–आतंकवाद, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, नशाखोरी, नस्लवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि। ये समस्याएं एक बड़ी चुनौती बनकर खड़ी हैं जिनको युवा ही समाप्त कर सकते हैं। 21वीं सदी में भारत के युवाओं पर विश्व की दृष्टि केंद्रित है। भारत के युवाओं के हुनर, उनमें अपार वैचारिक ऊर्जा को भांपकर और उनमें नवीन तकनीक के संचालन की दक्षता को देखकर विश्व मांग कर रहा है। चिकित्सा, शिक्षा, कला–साहित्य, संस्कृति, सैन्य, कृषि, व्यापार, वाणिज्य, अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि क्षेत्रों में युवा असीम ऊँचाईयो को छू रहे हैं। युवा ही भविष्य के सपनों को साकार करने की सामर्थ्य रख सकता है। आज इन युवाओं पर मीडिया प्रभाव सर्वाधिक देखा जा सकता है। नवीन पीढ़ी की राह आसान करने और उन्हें लक्ष्य तक पहुंचाने में मीडिया ने सहयोग किया है। मीडिया को हम संचार–साधन भी कहते हैं। जनसंचार के विभिन्न साधनों ने संचार के क्षेत्र में एक नई क्रांति पैदा की। इन माध्यमों को हम परंपरागत व आधुनिक माध्यमों में विभक्त करते हैं।

बीज शब्द– संचार माध्यम, युवा, प्रभाव।

प्रस्तावना:

संचार सुविधाओं का विस्तार जिस गति से हुआ है उसका समाज पर प्रभाव पड़ रहा है। हम प्राचीन समय के कठिन दौर और कठिन परिस्थितियों से आगे निकल आए हैं। आज हम 'संचार–क्रांति' के युग में हैं। पूर्व में परंपरागत संचार के माध्यमों के माध्यम से संचार प्रक्रिया आसान हुआ करती थी। किंतु आज नवीन संचार माध्यमों ने अपनी जगह बनाई है। संचार–साधन किसी भी राष्ट्र और समाज का आईना है। यह उस देश के सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। यह सूचना एवं प्रौद्योगिकी का दौर है। इनका सहारा लेकर मीडिया ने विश्व को एक गांव के रूप में बदल दिया है। संचार साधनों अर्थात् मीडिया ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्रों की संस्कृति, समाज को बहुत अधिक प्रभावित किया है। हमारी परंपराओं, मूल्यों को भी बदला है, सांस्कृतिक परिवर्तन किया है। यह हमारे नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक परंपराओं और मूल्यों के विकास में योगदान दे रहा है। जनसंचार माध्यमों की व्यक्ति में राजनीतिक जागृति उत्पन्न करने और उसे बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जनसंचार के माध्यमों जैसे–समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन एवं फिल्मों का न केवल राजनीति अभिरूचि जागृति करने और बनाए रखने, अपितु मनोवृत्ति परिवर्तन में भी सकारात्मक भूमिका है। इसका सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही तरह का प्रभाव पड़ा है।

साहित्यिक पुनरावलोकन–

वर्तमान में संचार माध्यमों ने मानवीय व्यवहार को बदलने का काम किया है। ये माध्यम मानसिक, शारीरिक व भावात्मक रूप से वह युवाओं को उद्वेलित कर रहे हैं। मीडिया के द्वारा अच्छी–बूरी दोनों ही तरह की खबरों/सूचनाओं का तीव्रता से प्रसार हो रहा है। इनसे निकली हुई सूचनाएं एक क्लिक पर फैल जाती है। संचार प्रौद्योगिकी की बात कहें तो संचार प्रौद्योगिकी ने समाज में बहुत परिवर्तन किया है। भारत में आधे से अधिक जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत युवाओं का है। विभिन्न विद्वानों, चिंतकों ने युवाओं के संबंध में बातें कहीं हैं। 'संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या समूह अपनी भावना एवं संवेग को अन्य व्यक्ति या समूह तक एक ऐसी सक्षमता से पहुंचाए, ताकि वे उसको समझकर या ग्रहण कर अपनी प्रतिक्रिया का बोध दिला सकते हैं।''[1] **डॉ0 श्यामाचरण दुबे** परिवर्तन के संदर्भ में 'विकास का समाजशास्त्र' पुस्तक में कहते भी हैं कि 'सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन आज आदमी के सामाजिक सरोकारों से जुड़ा हुआ अहम मुद्दा है। मार्क्स के समकालीन रहे विचारक **थर्सटीन वेबलिन** ने भी तकनीक और प्रौद्योगिकी कारकों का अहम माना है। उनके अनुसार 'प्रौद्योगिकी में होने वाले परिवर्तन समुदाय अथवा समाज में विभिन्न वर्गों की आदतें एवं विचारों में परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।'[2] जब किसी समाज की प्रौद्योगिकी में परिवर्तन होता है तो उस प्रौद्योगिकी के अनुसार समाज के सदस्य भी अपने को ढाल लेते हैं। समाज के सदस्यों की आदतों, विचार और व्यवहार में भी परिवर्तन होने लगता है। इसी को संदर्भित करते हुए बेबलिन ने भी कृषि व्यवस्था से औद्योगीकरण की ओर अग्रसर होने वाले समुदायों की बात कही है। उन्होंने प्रौद्योगिकी परिवर्तन और पूंजीवाद के विकास को लेकर 'विलासी वर्ग के सिद्धांत' का प्रतिपादन भी किया है। उनके अनुसार 'प्रौद्योगिकी समाज में आकर्षक विलासिता और आकर्षक उपभोग को उत्पन्न करती है।[3] अतः कहा जा सकता है कि सूचना सभी मानव के लिए आवश्यक है। सूचना पहुंचाने के लिए जनसंचार के साधनों अथवा मीडिया ने अपनी अहम् भूमिका निभाई है।

शोध प्ररचना एवं पद्धतिशास्त्र

जनसंचार साधनों ने यदि सबसे अधिक प्रभावित किया है तो वे हैं युवा। पर्वतीय क्षेत्र में रहने वाले युवाओं पर पश्चिमी संस्कृति एवं जनसंचार साधनों को विशेष प्रभाव अधिक देखा जा रहा है। अतः वैज्ञानिक अध्ययन हेतु कुमाऊँ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित सोबन सिंह जीना, परिसर में उच्च शिक्षारत् विद्यार्थियों के विचारों का मूल्यांकन किया गया है। प्रस्तुत् शोध में अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन कुमाऊँ विश्वविद्यालय के सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा में अध्ययनरत् युवाओं पर आधारित है। सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा में कला, विज्ञान, वाणिज्य, विधि, दृश्यकला व शिक्षा कुल छः संकाय हैं। वर्ष 2018–19 के अनुसार इसमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों की कुल संख्या 5797 है। तीन वृहद कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् 3798 युवाओं में से 10 प्रतिशत, अर्थात् 380 युवाओं को अध्ययन हेतु चयनित किया गया है। शोध की वैज्ञानिकता को ध्यान में रखते हुए दैव निदर्शन की लॉटरी पद्धति माध्यम से प्रत्येक संकाय में अध्ययनरत युवाओं की संख्या के आधार पर प्रत्येक संकाय से 10–10 प्रतिशत ऐसे युवाओं का चयन अध्ययन हेतु किया गया है जिनकी आयु 17 से 25 वर्ष तक की है।

तथ्य संकलन, वर्गीकरण एवं सारणीयन

आंकड़ों को अध्ययन हेतु प्राथमिक स्रोत से प्राप्त किया जाएगा। जिसमें संबंधित व्यक्ति से सूचना एकत्रित करने के उद्देश्य से साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया। प्रस्तुत् शोध में आवश्यकतानुसार अवलोकन पद्धति का भी प्रयोग किया गया है जो पूर्णत' असहभागी अवलोकन पर निर्भर है। साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से विभिन्न सूचनाएँ प्राप्त कर उत्तरों की सत्यता को जांचने का प्रयत्न किया गया है। द्वितीयक तथ्यों के एकत्रीकरण हेतु विभिन्न संबंधित साहित्य, संदर्भ–ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकाएं, वेबसाइट एवं सार्वजनिक सूचनाओं का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः

1. संचार माध्यमों का युवाओं पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. मीडिया का युवाओं में आए हुए परिवर्तन एवं जागरूकता का अध्ययन।

सारणीयन एवं आंकड़ों का विश्लेषणः

वर्तमान दौर में संचार माध्यमों का बहुत प्रभाव युवाओं के जीवन एवं उनकी मनोदशा को प्रभावित कर रहा है। आम आदमी की आवाज को बुलंद करने, सामाजिक समस्याओं का निराकरण करने, कुप्रथाओं का अंत करने, जागरूकता फैलाने, देश–विदेश की संस्कृति और साहित्य को समझने, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समाचारों से जन–समूह का ज्ञानवर्धन व उन्हें जागरूक करने हेतु ये सर्वाधिक महत्वपूर्ण व सक्षम साधन के रूप में अपनी पैठ बनाये हुए हैं। संचार माध्यमों का प्रभाव सभी जगह परिलक्षित होता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जनसंचार साधनों का प्रभाव काफी गहरा पड़ा है। ऐसे में युवाओं से जानने का प्रयास किया गया कि सामाजिक मूल्य एवं संस्कृति पर जनसंचार साधनों पर भी पड़ा है या नहीं? इसके प्रत्युत्तर में प्राप्त आंकड़े निम्न तालिका में प्रस्तुत किए गए हैं–

युवाओं का सामाजिक मूल्य और संस्कृति पर प्रभाव संबंधी सारणी

सारणी संख्या–

युवाओं का सामाजिक मूल्य और संस्कृति पर प्रभाव (संकायवार)	हां		नहीं		कह नहीं सकते		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.कला	102	76.11	19	08.20	13	09.70	134	100
2.विज्ञान	154	81.05	22	11.57	14	07.36	190	100
3.वाणिज्य	40	71.42	07	12.5	09	16.07	56	100
4.कुल योग	296	77.90	48	12.63	36	09.47	380	100

उपरोक्त सारणी से परिलक्षित होता है कि युवाओं पर संचार माध्यमों के फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक पहलू में प्रभाव पड़ा है। ऐसे ही सामाजिक मूल्य एवं संस्कृति पर भी संचार माध्यमों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस बात को स्वीकार करने वाले कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के सर्वाधिक युवा पाए गए। इन तीनों सकायों के क्रमशः 76.11%, 81.05%, 71.42% युवाओं ने हां में प्रत्युत्तर दिए। 08.20%, 11.57% एवं 12.5% क्रमशः कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के युवाओं ने नहीं तथा कला के 09.70%, विज्ञान के 07.36% एवं वाणिज्य के 16.07% युवाओं ने कह नहीं सकते में अपने प्रत्युत्तर दिए। उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि तीनों संकायों के सर्वाधिक 77.90 प्रतिशत युवा मानते हैं कि युवाओं का सामाजिक मूल्य एवं संस्कृति पर प्रभाव पड़ा है।

मीडिया ने समाज में राष्ट्रप्रेम, जनजाग्रति, जन जागरूकता चेतना पैदा की है। संचार माध्यमों में लोगों की दिनचर्या, खाने–पीने, रहने, पहनने और बोलने के तरीकों को भी परिवर्तित कर दिया है। मीडिया ने अच्छे काम भी किए हैं वहीं इसमें प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों ने समाज में अस्थिरता उत्पन्न कर दी है। मीडिया के विविध माध्यमों ने प्रसारित होने वाले हिंसक कार्यक्रमों का प्रभाव समाज के साथ–साथ युवाओं पर पड़ता है। युवा इन साधनों का उपयोग गलत कार्यों के लिए कर रहा है। जिससे आपराधिक घटनाएँ निरंतर बढ़ रही है, तनाव, संघर्ष एवं भटकाव की स्थिति उत्पन्न हो रहा है। फिल्मों व नाटकों में प्रदर्शित किए जाने वाले मारधाड़, खून–खराबे, अश्लीलता भरे दृश्य युवा–पीढ़ी के लिए अभिशाप बन रही है। युवा इनको देखकर और इनसे प्रेरित होकर अपने जीवन में लागू करने का प्रयास कर रहे हैं। जिससे हिंसात्मक प्रवृत्ति बढ़ रही है। जैसा कि वर्तमान में दिल्ली में श्रद्धा मर्डर कांड को अंजाम देने वाला आफताब भी फिल्म के नकारात्मक दृश्य से प्रेरित हुआ। उसने क्राइम सीन देखकर ही वैसे श्रद्धा का मर्डर कर उसके शरीर के टुकड़े कर उसकी लाश को ठिकाने लगाने की सोची। ऐसे ही देशभर में कई उदहारण हमारे सामने प्रस्तुत हो चुके हैं। समाज, संस्कृति व शैक्षिक माहौल दूषित हो रहा है और आदर्श समाज बनाने में ये सभी घातक सिद्ध हो रहे हैं। इनके माध्यम से प्रस्तुत किए जाने वाले ऐसे दृश्य युवा हृदय में नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। जो हिंसात्मक प्रवृत्ति विकसित करने के लिए दोषी हैं। इस पर युवाओं की सोच को निम्न आंकड़ों द्वारा प्रस्तुत किया गया है–

सारणी संख्या–

जनसंचार साधन द्वारा युवाओं में हिंसात्मक प्रवृत्ति को जन्म देने संबंधी सारणी

हिंसात्मक प्रवृत्ति (संकायवार)	सहमत		असहमत		कह नहीं सकते		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1. कला	100	74.62	13	09.70	21	15.67	134	100
2. विज्ञान	117	61.57	27	14.21	46	24.21	190	100
3. वाणिज्य	31	55.35	09	16.07	16	28.57	56	100
4. कुल योग	248	65.26	49	12.90	83	21.84	380	100

उपरोक्त सारणी में कला विज्ञान व वाणिज्य के क्रमशः 74.62%, 61.57%, 55.35% प्रतिशत युवा विद्यार्थियों ने माना है कि हिंसात्मक प्रवृत्ति को बढ़ाने में जनसंचार माध्यमों को दोषी माना जा सकता है। 09.70%, 14.21%, 16.07% क्रमशः कला, विज्ञान एवं वाणिज्य तीनों संकायों के युवा पाए गए, जो असहमत थे। जबकि 15.67%, 24.21% तथा 28. 57% युवाओं ने अपने उत्तरों की अभिव्यक्ति कह नहीं सकते में की। अतः कहा जा सकता है कि जनसंचार साधनों द्वारा युवाओं में हिंसात्मक प्रवृत्ति का जन्म हो रहा है, इस बात को सर्वाधिक 65.26 प्रतिशत युवा सहमत हैं।

यह युग विज्ञान का युग है और विज्ञान ने हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। हमारे रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार, हमारी सोच–समझ आदि सभी कुछ को विज्ञान और तकनीक ने बदला है। जनसंचार साधन भी इसी तकनीकी का हिस्सा हैं। आज जनसंचार साधनों की ग्रामों में भी लोकप्रियता बढ़ती चली जा रही है। ग्रामों में भी इनकी पहुंच है। संचार मानव जीवन के संचार की प्रक्रिया को आसान बनाता है। क्या युवा वर्ग सूचनाओं, ज्ञान, विचारों, मतों आदि का आदान–प्रदान सही तरीके से करता है और इन साधनों को वैज्ञानिकता से जोड़कर देखता है? इसमें उसकी सोच क्या है? इसको जानने के लिए प्राप्त प्रत्युत्तर निम्नवत् हैं–

सारणी संख्या–

संचार साधन विज्ञान है संबंधी सारणी

संचार साधन विज्ञान हैं (संकायवार)	हाँ		नहीं		पता नहीं		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1. कला	79	58.95	26	19.40	29.	21.64	134	100
2. विज्ञान	88	46.31	37	19.47	65	34.211	190	100
3. वाणिज्य	40	71.42	05	08.92	11	19.64	56	100
4. कुल योग	207	54.47	68	17.90	105	27.63	380	100

उपरोक्त सारणी में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के क्रमशः 58.95%, 46.31%, 71.42% प्रति युवाओं ने कहा कि दिन–प्रतिदिन हो रहे अनुसंधान, देश–दुनिया से संपर्क स्थापित करना, पल में ही दुनिया के सामने सूचनाएं लाना, एक–दूसरे को आमने–सामने खड़ा कर देना इसे विज्ञान से जोड़ता है। अतः माना जा सकता है कि संचार एक विज्ञान है। कला के 19.40%, विज्ञान के 19.47% एवं वाणिज्य के 08.92% उत्तरदाता इसे विज्ञान नहीं स्वीकार करते। किंतु तीनों संकायों के क्रमशः 21.64%, 34.21%, 19.64% युवा कुछ कह सकने की स्थिति में नहीं पाए गए। इसलिए उन्होंने अपने प्रत्युत्तर पता नहीं में दिए हैं। उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि तीनों संकायों के सर्वाधिक 54.47 प्रतिशत युवा संचार साधनों को विज्ञान मानते हुए सहमत दिखाई पड़ते हैं।

इंटरनेट के माध्यम से ही हम देश–विदेश की जानकारियों को देख पा रहे हैं। आज असंख्य वेबसाइटों के बढ़ते प्रचार व प्रसार के कारण युवाओं के संयम व धैर्य जबाब दे रहा है। ऐसी वेबसाइटें हैं जो उसके चरित्र को विघटित कर रही हैं। सुबह उठने से लेकर, चलते–चलते, गाड़ी चलाते हुए, प्रातः एवं सायंकालीन भ्रमण करते हुए, भोजन ग्रहण करते हुए, यहां तक कि बाथरूम में भी वो मोबाइल के माध्यम से अनर्गल वेबसाइटों की दुनिया में खोए रहते हैं। यह दुष्प्रभाव ही है।

क्या इससे युवाओं की सकारात्मक दिशा तय हो सकती है? को जानने का प्रयास करने पर प्राप्त आंकडों का विवरण निम्नवत् है–

सारणी संख्या–

वेबसाइट से युवाओं को दिशा प्राप्त होने संबंधी सारणी

युवाओं को दशा व दिशा (संकायवार)	सहमत		असहमत		कह नहीं सकते		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1. कला	50	37.31	21	15.67	63	47.01	134	100
2. विज्ञान	40	21.05	121	63.68	29	15.26	190	100
3. वाणिज्य	34	60.71	09	16.07	13	05.35	56	100
4. कुल योग	124	32.63	151	39.73	105	27.64	380	100

उपरोक्त सारणी में कला संकाय के 37.31%, विज्ञान संकाय के 21.05% तथा वाणिज्य संकाय के 60.71% युवाओं का मानना है कि दिन–प्रतिदिन नवीन वेबसाइटों का निर्माण युवाओं को नई दिशा प्रदान करता है, क्योंकि युवाओं का संपर्क नवीन उपलब्धियों व अन्वेषणों से होता है जो उन्हें सही दिशा में प्रेरित करने के लिए आवश्यक हैं। किंतु 15.67% प्रतिशत कला, 63.68% विज्ञान व 16.07% वाणिज्य के युवाओं ने इंटरनेट पर बढ़ते वेबसाइटों के परिणामों को प्रतिकूल पाया और वे इसे नकारात्मक बतलाते हैं तथा युवाओं के लिए इसे दिशाहीन माना है। जबकि तीनों संकायों के क्रमशः 47.01%, 15. 26% और 05.35% युवाओं ने कह नहीं सकते में अपने विकल्प के रूप में चयनित किया।

युवाओं के जीवन से जीवन–मूल्य समाप्त हो रहे हैं। ''मूल्य एक प्रकार से जीवन–दृष्टि का प्रतिफलन है। जीवनयापन करते मनुष्य में धीरे–धीरे इसका स्वाभाविक विकास होता रहता है। जिस समाज व राष्ट्र में मनुष्य जीवन–यापन करता है उसकी युगीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक सम–विषम परिस्थितियों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसके व्यक्तिगत एवं समाजगत चिंतन पर प्रभाव पड़ता रहता है। मनुष्य के बुद्धिजीवी होने के कारण समाजगत विविध चेतनाओं का प्रभाव उसके अंतर्बाह्य व्यक्तित्व पर पड़ना स्वाभाविक है। फलतः उसकी चिंतन प्रक्रिया तथा जीवनदृष्टि तदनुसार निर्मित होती रहती है। मानव जीवन प्रगतिशील एवं परिवर्तनशील होता है। अतः युगीन परिवर्तित परिस्थितियों के परिणामस्वरूप मनुष्य की जीवन जीने की दृष्टि भी परिवर्तित होती रहती है। जिस प्रकार उसकी जीवन–दृष्टि के निर्माण में समाजगत बाह्य वातावरण का योगदान होता है उसी प्रकार उसके जन्मजात संस्कार एवं परंपरा प्राप्त जीवन–मूल्यों का भी योगदान रहता है।''4

संचार के साधनों के निरंतर प्रभाव के कारण जीवनमूल्य भी प्रभावित हुए। जहाँ पूर्व में संचार माध्यम उचित सामाजीकरण के साधन के रूप में स्वीकार्य थे, परंतु आज के आधुनिक संचार साधन उसके उलट हैं। युवाओं से पूछा गया कि संचार माध्यम युवाओं का उचित सामाजीकरण करने में समर्थ–असमर्थ हैं या पूर्ण समर्थ हैं या पूर्ण असमर्थ हैं? तो उनके विचार निम्नवत् हैं–

सारणी संख्या–

संचार माध्यम उचित सामाजीकरण करने संबंधी सारणी

उचित सामाजीकरण करने (संकायवार)	समर्थ		असमर्थ		पूर्ण समर्थ		पूर्ण असमर्थ		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.कला	65	48.50	38	28.35	23	17.16	08	05.97	134	100
2.विज्ञान	147	77.36	15	07.89	19	10.00	09	04.73	190	100
3.वाणिज्य	28	50.00	11	19.64	10	17.85	07	12.5	56	100
4.कुल योग	240	63.15	64	16.84	52	13.70	24	06.31	380	100

उपरोक्त सारणी में जनसंचार माध्यमों को उचित सामाजीकरण हेतु महत्वपूर्ण मानने वालों में कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय के क्रमशः 48.50%, 77.36%, 50.00% युवा हैं। जिनका मानना है कि उचित सामाजीकरण करने में जनसंचार माध्यम समर्थ हैं। जनसंचार माध्यमों को उचित सामाजीकरण करने में असमर्थ मानने वाले युवाओं का प्रतिशत क्रमशः 28.35%, 07.89% तथा 19.64% है। कला के 17.16%, विज्ञान के 10.00%, वाणिज्य के 17.85% पूर्ण समर्थ के पक्षधर हैं तो तीनों संकायों में क्रमशः 05.97, 04.73%, 12.05% ऐसे युवा थे जो संचार माध्यमों को उचित सामाजीकरण हेतु पूर्ण असमर्थ पाते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझावः

युवाओं पर सामाजिक मूल्य एवं संस्कृति पर संचार माध्यमों का प्रभाव सर्वाधिक पड़ा है। तीनों संकाय के सर्वाधिक युवाओं ने माना है कि हिंसात्मक प्रवृत्ति को बढ़ाने में जनसंचार माध्यमों को दोषी माना जा सकता है। कला संकाय के 37. 31%, विज्ञान संकाय के 21.05% तथा वाणिज्य संकाय के 60.71% युवाओं का मानना है कि दिन–प्रतिदिन नवीन वेबसाइटों का निर्माण युवाओं को नई दिशा प्रदान करता है, क्योंकि युवाओं का संपर्क नवीन उपलब्धियों व अन्वेषणों से होता है जो उन्हें सही दिशा में प्रेरित करने के लिए आवश्यक हैं। आज का युवा मीडिया से भ्रमित हो रहा है। अतः मीडिया का सही उपयोग करने, तथ्यपूर्ण जानकारी पाने, कम प्रयोग करने के लिए जागरूक करना होगा। इन साधनों से स्मृति हानि, अव्यवस्था को बढ़ावा मिला है। अतः इनसे प्रसारित होने वाली सूचनाओं की सत्यता की जांच आवश्यक है।

संदर्भ सूचीः

1. चौपड़ा, लक्ष्मेंद्रा, जनसंचार का समाजशास्त्र, आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला, 2002
2. **Veblen Thorstein, The theory of leisure class, Third editions, George Allen and Unwin Ltd, London, 1957, P.35**
3. **Veblen Thorstein, The theory of leisure class, Third editions, George Allen and Unwin Ltd, London, 1957, P.193**
4. मिश्र, डॉ0 आदर्श, सोहनलाल द्विवेदी के काव्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, सम्मेलन पत्रिका (संपा–रामकिशोर शर्मा), हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद, 2015, पृ0 38